श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

अठिने दिखे श्याम, बठिने दिखे श्याम,
जठिने मुंडो फेरूं, दिखे श्याम-श्याम श्याम ।। टेर ।।

सांवरिया थारी, झांकी सजाई जी-२,
थे दोड्या आया हो, किर्तन के माहीं जी,
प्यारो सो मुखड़ो चमके, लागे ज्यूं हीरो दमके,
थारी गूंज रही जयकार, बाबा श्याम-श्याम-श्याम ।। १ ।।

कान्हुड़ो म्हारे, हिवड़े समायो जी-२,
आंको रूप सुहाणो है, म्हारे मनड़े भायो जी,
जांगु तो दिखे श्याम, सोऊं तो दिखे श्याम,
म्हारे रोम-रोम में बसग्यो, बाबो श्याम-श्याम-श्याम ।। २ ।।

बाबा जी थांसू, अरजी लगावां जी-२,
थे बेगा आज्यो जी, जद ''हर्ष'' बुलावां जी,
म्हारी आख्यां माही श्याम, सुपणे के माही श्याम,
होठां सू निकले एक नाम, बस श्याम-श्याम-श्याम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आज म्हारे आंगणिये में...)

आज म्हारे आंगणिये में आया बाबा श्याम जी,
आया बाबा श्याम जी, पधारया बाबा श्याम जी ।। टेर ।।

अहिलावती का लाल कुहावो, कलयुग रा अवतारी जी,
तीन बाण तरकश में राखो, महिमा थारी भारी जी,
लीलो थारे, संग बिराजे-२, छम छम नाचे,
छम छम नाचे जोर जोर का, मारे ठुमका आज जी... ।। १ ।।

घर घर पूजा होवे थारी, हारे का थे साथी जी,
सुपणे माहीं नाम सुण्या, दुष्टां री फाटे छाती जी,
सेवक थाने, आज रिझावे-२, छन-छन बाजे,
छन-छन बाजे झांझ नगाड़ा, धुन गूंजे झंकार जी... ।। २ ।।

ऊंचे आसण आप बिराजो, खूब सज्यो सिणगार जी,
''हर्ष'' सांवरा भोग लगाओ, भक्त करे मनवार जी,
बाबो म्हाने, आशिष देवे-२, खिल खिल हांसे,
खिल खिल हांसे आज सांवरो, सुण लीन्ही पुकार जी... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : पिछम धरा सूं म्हारा बापजी...)

आओ जी साँवरिया, थारी बाट उड़ीकाँ-२,
कोई आकर भोग लगाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटू वाला श्याम बिहारी ।। टेर ।।

करमा थी बड़ भागण, जैको खीचड़ खायो-२,
कोई साग विदुर घर खायो जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। १ ।।

नानी-नरसी-मीरा को थे, मान बढ़ाया-२,
कोई म्हारो भी मान बढ़ाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। २ ।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, चारूँ दिशा सूँ-२,
कोई लीले चढ़कर आओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। ३ ।।

टाबरिया ल्याया है 'हर्ष', खीर चूरमो-२,
कोई रूच-रूच भोग लगाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। ४ ।।

तर्ज : टूटी बाजुबन्द री लूम...

आयो तीज्यां रो त्योहार, रिमझिम-रिमझिम पड़े फुहार,
कोई झूलो झूलण आयो म्हारो साँवरियो सरकार,
लाड लडाओ रे साथिड़ा, डोर हिलाओ रे साथिड़ा,
आयो सावणियो ...।। टेर ।।

थारो खूब सज्यो सिणगार, ज्याँमें गजरां की भरमार,
थारा भक्त करे मनवार, झूलो खाटू का सरदार,
थारो रूप सलूणो कान्हुड़ा म्हे निरखां बारम्बार,
लाड लडाओ रे...।। १ ।।

आई सावणिये री तीज, मनड़ो थारो जासी रीझ,
बरसे झर झर इन्दर देव, तन मन थारो जासी भीज,
छाई हरियाली तीज्यां में देखो झूले री बहार,
लाड लडाओ रे... ।। २ ।।

थे तो झूले का शोकीन, बेगा हो जाओ आसीन,
थारो ''हर्ष'' साँवरा सेठ, थारी सेवा में तल्लीन,
सगला चरणां धोक लगाओ आयो जग को पालनहार,
लाड लडाओ रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : आयो सावणियो जरा सी गोरी...)

दोहा : पीली पीली पागड़ी पे, मलस्याँ लाल गुलाल ।
मेलो आयो बावला, बेगो खाटू चाल ।।

आयो फागणियो उठाल्यो, थारे हाथाँ में निशान,
आयो फागणियो ।। टेर ।।

खाटूवालो बाबो थाने, ''हेला मार बुलावे''-२, थाने,
फागणिये के मेले मांही, ''कैयां देर लगावे''-२, सेवक,
इब तो छोड़ के-२, सै काम मेरे सागे चालो रे,
आयो फागणियो... ।। १ ।।

पचरंगा निशान उठाकर, ''खाटू पैदल जास्याँ''-२, आपाँ,
नाचाँ कूदाँ मौज मनावाँ, ''मीठा भजन सुणास्याँ''-२, आपाँ,
क्याँकि आँट रे-२, भगत बेगा बेगा हालो रे,
आयो फागणियो... ।। २ ।।

फागणिये में श्याम धणी को, ''मेलो भारी लागे''-२, भाया,
मतना सोच विचार करे तू, ''होले मेरे सागे''-२, भाया,
'हर्ष' चालो रे-२, भगत जाके घूमर घालो रे,
आयो फागणियो... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : पार करो मेरा बेड़ा भवानी...)

आई बिरज में होली रे देखो, आई बिरज में होली,
भीगे रे राधा की चोली बिरज मे, आई बिरज में होली ।।

कुँज गलिन में शोर मचे है, रंग अबीर गुलाल उड़े है,
सखियों के संग राधा आई, ग्वालों के संग कृष्ण कन्हाई,
नाचे रे ग्वालों की टोली बिरज में, आई बिरज में होली ।। १ ।।

राधा ने ज्यूँ रंग लगाया, कान्हा ने उसे अंग लगाया,
मारी भरके जब पिचकारी, भीगी चुनरिया भीगी रे साड़ी,
छेड़े रे हमजोली बिरज में, आई बिरज में होली ।। २ ।।

राधा बोली सुनले रे कान्हा, होली का बस एक बहाना,
जान गई मैं तेरी शरारत, जाके करुँगी माँ से शिकायत,
मैं हूँ बिल्कुल भोली बिरज में, आई बिरज में होली।। ३ ।।

थामी कलाई बोले यूँ कान्हा, मुझको तो भाये तुझको सताना,
'हर्ष' हमारा जन्मों का बन्धन, आ गोरी रंगले होली में तन मन,
मारो ना नैनों से गोली बिरज में, आई बिरज में होली ।। ४ ।।

(तर्ज : थाने काजलियो बनाल्युँ...)

आयो फागणियो रंगीलो, हेलो मारे रे छबीलो-२,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। टेर ।।

पचरंगा निशान बणाओ जी, ज्याँपे बाबा को नाम लिखाओ जी,
ओऽऽऽ, हाथाँ में लेर ''आपाँ पैदल जावांगा जी''-२,
ढोलक ढफली चंग बजावाँ, झूमा नाचाँ मौज मनावाँ,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। १ ।।

लेल्योरंगासूभरपिचकारीजी,जाकेरंगदीज्योश्यामबिहारीजी,
ओऽऽऽ, बाबा सूं जाय ''आपां होली खेलांगा जी''-२,
अंतर केशर सूं नुहावाँ, गालाँ ऊपर रंग लगावाँ,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। २ ।।

बठे मेलो गजब को लागे जी, सारे घर का ने लेल्यो सागे जी,
ओऽऽऽ, मेले में जाय ''आपाँ मौज उड़ावांगा जी''-२,
'हर्ष' बैठ्या के विचारो, बाबो भरसी रे भण्डारो,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - होलिया में उड़े रे गुलाल...)

आयो बुलावो मेरो आज, फागणिये के मेले में,
बाबो बुलायो मन्ने आज, फागणिये के मेले में ।। टेर ।।

रात नींद में सोय रहयो थो, सुपणे माँही खोय रहयो थो,
हेलो लगायो बाबो श्याम, फागणिये के मेले में ...।। १ ।।

टोल्याँ की टोल्याँ जद जावे, मेरो भी हिवड़ो ललचावे,
मैं भी तो जाके खेलूं फाग, फागणिये के मेले में ...।। २ ।।

ऐसो रंग चढ़े फागण में, ढ़पली चंग बजे फागण में,
सेवक नाचे नो नो ताल, फागणिये के मेले में ...।। ३ ।।

''हर्ष'' साँवरो मेरी सुणली, जाणे की इब त्यारी कर ली,
बेगो सो जाऊँ मैं तो आज, फागणिये के मेले में ...।। ४ ।।

(बिदाई तर्ज- श्याम अलबेलो)

दोहा - लेवाँ बिदाई साँवरा, हिवड़ो करे पुकार ।
थाँ बिन कँईया आवड़े, साँवलिया सरकार ।।

आँख्या भर आई, आँख्या भर आई-२
फागण की बारस बीती -२, होसी बिदाई
आँख्या भर आई, आँख्या भर आई-२ ।। टेर ।।

फागण के मेले माहीं, घणो सुख पायो रे-२
जाँवती बखत म्हारो, हियो भर आयो रे-२
कैंयाँ म्हे सह पाँवाला-२, थासूँ जुदाई,
आँख्या भर आई, आँख्या भर आई-२ ।।

राजी राजी जा रे बेटा, मनड़ो क्यूँ डोले है-२
''हर्ष'' तेरे मन की जाणू, साँवरो यूँ बोले है-२
बेगो बेगो आतो रहिजे-२, करस्यूँ सुणाई
आँख्या भर आई, आँख्या भर आई-२ ।।

फागण की बारस बीती-२, होसी बिदाई
आँख्या भर आई, आँख्या भर आई-२ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेलो तो देखबा न जाबा दे ओ रसिया)

इबकी तो श्यामजी के ''जाबा दे ओ रसिया"-२,
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। टेर ।।

श्याम धणी री ढोला, ओल्यूँ घणी आवे-२,
तो बेगो सो टिकट ''कटादे ओ रसिया"-२,
इबकी तो श्याम जी के जायबा दे ।। १ ।।

साँवली सुरत म्हारे, हिवड़े में बसगी-२,
तो म्हाने भी दरस ''करादे ओ रसिया"-२,
इबकी तो श्याम जी के जायबा दे ।। २ ।।

खाटू नगरिया जास्यूँ, मन म्हारो तरसे-२,
तो म्हारी भी आस ''पुरादे ओ रसिया" -२,
इबकी तो श्याम जी के जायबा दे ।। ३ ।।

भगतां रे सागे 'हर्ष', रोजिना तू जावे-२,
तो एकर म्हाने भी ''पुगादे ओ रसिया"-२,
इबकी तो श्याम जी के जायबा दे ।। ४।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आओ जी आओ म्हारा हिवड़े रा पावणा...)

ऐसो दातार कठे देख्यो ना सुण्यो जी-२,
शरणे पड़यां को बाबो काम बणावे जी,
आने जो ध्यावे बोतो मौज उड़ावे जी,
ऐसो दातार कठे देख्यो ना सुण्यो जी ।। टेर ।।

निज भगतां पर, भीड़ पड़े तो, झट से उबारे म्हारो, श्याम धणी,
दर आये की, आस पुरावे, दर पे जो लेके जावे, आस घणी,
ऐसो दातार... ।। १ ।।

आंधलियां ने, आँख्या देवे, पागंलिया ने देवे, टांगड़ली,
निर्धणिया, ने, दौलत देवे, बेटो पावे अठे, बाँझड़ली,
ऐसो दातार... ।। २ ।।

बिन बोल्यां ही निज भगतां की, पीड़ पिछाणे म्हारो, सांवरियो,
''हर्ष'' सुमिर ले, कान्हूड़े ने, घर भर देसी तेरो, नटवरियो,
ऐसो दातार... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कागलिया, गहरो गहरो बोले रे...)

ओ साथीड़ो, खादू माही जाकर थे-२,
म्हारे बाबाजी ने दीज्यो यो संदेश,
ओ कान्हुड़ा, भगत बुलावे रे-२ ।। टेर ।।

क्यूं ना बुलायो, ओ हरजाई-२,
कइयाँ भुलायो, म्हाने कन्हाई,
कोई आके-२, दरश दिखा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। १ ।।

आवेली कद सी, म्हारी भी बारी-२,
मनसूं भुलाज्यो, भुलां थे म्हारी,
कोई म्हारी-२, आस पुरा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। २ ।।

''हर्ष'' कहवे थे, रुठया क्यूं म्हासूं-२,
जन्म-जन्म री, प्रीत है थासूं,
कोई म्हासूं-२, प्रीत निभा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : टूटी बाजुबन्द री लूम)

उड़े आकाशां निशान, शोभा कोन्या वरणी जाय,
आयो फागणियो रंगीलो चालो खाटू जी के माय,
चालो चालो रे साथिड़ा, हालो हालो रे साथीडा ।।
आयो फागणियो ... ।। टेर ।।

गूंजे ढफली की तान, याही फागण की पिछाण,
मीठे भजनां को पान, करल्यो श्याम को गुणगान,
झाला दे दे करके भगतो थाने सांवरियो बुलाय ।।
चालो चालो रे... ।। १ ।।

चाली फागण की बयार, बाबा श्याम जी के द्वार,
लेके हो जाओ तैयार, टाबर टीकरां के लार,
चालो श्याम धणी को झण्डो थारे हाथां में उठाय ।।
चालो चालो रे... ।। २ ।।

'हर्ष' मेलो भर्‌यो विशाल, नाही दूजी कोई मिसाल,
उडे रंग और गुलाल, माची होली की धमाल,
कोई रंग दीज्यो थे कान्हुड़े ने मंदरिये के माय ।।
चालो चालो रे... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जग जननी मैया मंशा दे भारी...)

दोहा : टाबर आयो द्वार पे, सुणले लखदातार ।
या तो पाछो मोड़ दे, या कर दे बेड़ो पार ।।

कद करस्यो म्हाँ पर, किरपा थे भारी,
हे तीन वाण धारी ।। टेर ।।

लखदातारी आप कुहावो, ''शीश का दानी श्याम''-२,
सेवक थाँसू अरज लगाई, ''सुण लिजो घणश्याम''-२,
आस पुरा म्हारी, हे तीन वाण... ।। १ ।।

हाथ पसारे आज खड्यो है, ''दर पे थारो दास''-२,
नैणा माहीं नीर भरयो है, "कुछ ना मेरे पास"-२,
झोली भर म्हारी, हे तीन वाण... ।। २ ।।

थारी भगती मैं पाँऊ जी, ''ऐसो द्यो वरदान''-२,
जनम-जनम तक ''हर्ष'' करेलो, ''थारो ही गुणगान''-२,
पत राखो म्हारी, हे तीन वाण... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घूघरी)

कान्हुड़ा थारो खीचड़लो बणाय,
थारी करमा ल्याई, चाव स्युँ जी म्हारा श्याम ।। टेर ।।

देसी घी की प्याली देई ढुलाय,
थारे जीम्याँ पाछे, खायस्युँ जी म्हारा श्याम ।। १ ।।

बाबो म्हाने काम दियो भुलाय,
थाने आज जिमाऊँ, भाव स्युँ जी म्हारा श्याम ।। २ ।।

मतना बैठो आज भरोसे माय,
बाबो कद आसी, गांव स्युं जी म्हारा श्याम ।। ३ ।।

रुच-रुच जीमों पड़दो दियो लगाय,
पाछे थारा पगल्या, दाबस्युं जी म्हारा श्याम ।। ४ ।।

'हर्ष' श्याम म्हारे मन की देओ पुराय,
थारा जुग-जुग गुण मैं, गायस्युं जी म्हारा श्याम ।। ५ ।।

(तर्ज : थारे झांझ नगाड़ा...)

कान्हो, कैसो रूप बणायो रे,
बण मणिहारी राधाजी से मिलणे आयो रे,
मिलणे आयो रे सांवरो मिलणे आयो रे ।। टेर ।।

घेर घुमेरे घाघरे पर, चूनड़ ओढ़ी लाल
नैणा माही काजल घाल्यो, होठां लाली लाल,
चुड़ला, सिरपे धर कर ल्यायो रे... ।। १ ।।

गली गली में हेला मारे, मथुरा को सरदार,
प्रेम दिवानों बण बेचे जी, चुड़ला लखदातार-२,
कान्हो, कैसो गजब यो ढ़ायो रे... ।। २ ।।

सोणो सो इक छांट के चुड़लो, बोली राधा प्यारी,
घणे जतन सूं हाथा माहीं, पहरादे मणिहारी,
कान्हो, मन ही मन मुस्कायो रे... ।। ३ ।।

पूछण लागी दाम बता जद, मुल्क्या कृष्ण कन्हाई,
''हर्ष'' तेरे सै दाम के लेस्यूं, झांकले आंख्या माहीं,
जुल्मी, कैसो भेष बणायो रे...
त्रिलोकी को नाथ आज के स्वांग रचायो रे... ।। ४ ।।

तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा...

कुण घाल्यो रे कान्हा, आख्याँ में सुरमो थारे सोवणो ।।

तीखे तीखे नैणां मांही, सुरमो झीणो झीणो,
नैण सुं नैण मिलाऊँ तो मेरो मुश्किल हो गयो जीणो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। १ ।।

कान्हुड़ा गिरधारी थारी, आख्याँ मोटी-मोटी,
अइयाँ की मटकावो थे भगतां पर फेंको गोटी जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। २ ।।

मतवारी आख्याँ में सुरमो, सोने पर सुहागो,
कजरारे नैणां को जादू भगताँ उपर छाग्यो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। ३ ।।

हे बड़भागण सुरमा दानी, कैसो पुण्य कमायो,
''हर्ष'' साँवरो तेरो सुरमो आख्याँ माहीं घलायो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : पल्लो लटके...)

खाले डट के रे भोग लगाले डट के,
कि तेरे, छप्पन भोग लगायो बाबा खाले डट के ।। टेर ।।

लाडू पेड़ा खीर चूरमो हलवो भोग लगाया,
राजभोग रसगुल्ला बरफी माखन मिश्री ल्याया,
इमरती, सांख भरी रसदार बाबा... ।। १ ।।

फलका पूड़ी मिसी रोटी मोठ चणा और भात,
पंचमेला की दाल कढ़ी और सांगर सरसो साग,
कि कोन्या, फोगले रो रायतो गले में अटके,... ।। २ ।।

माठी भुजिया दालमोठ सिंघाड़ा चनाचूर,
बड़ा पकोड़ी और कचौड़ी चटणी ल्यो भरपूर,
सांगरी, कैर फली पापड़ को स्वाद लागे हटके,...।। ३ ।।

पाछे खाओ सेव संतरा चीकू केला खजूर,
आम अनार अंगूर पपीता आडू खाओ हजूर,
कि पीयो, बेदाणा लीची को रस गट गट के,... ।। ४ ।।

दाख छुआरा काजू पिस्ता खुरमाणी बिदाम,
केशर रबड़ी दूध मलाई नाटण को के काम,
कि पीले, चांदी को गिलास बाबा भर-भर के,... ।। ५ ।।

गंगा जल सूं चलू करावां थारा हाथ धुलावां,
केशरियो कलकत्ती बीड़ो थाने ''हर्ष'' खिलावां,
ओ बाबा, बेगो आके जीम म्हारो हियो भटके,... ।। ६ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मिसरी को बाग लगा दे रसिया...)

खाटू की टिकट कटादे रसिया,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। टेर ।।

रंग रंगीलो बठै श्याम विराजे, मोर छड़ी जाँके हाथां साजे,
मन मोहिणी-२, मुरत जादूगारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। १ ।।

साँवलो सलुणों म्हारे हिवड़े भायो, म्हाँ पर गहरो रंग चढ़ायो,
या तो कान्हुड़े की-२, माया म्हाने सारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। २ ।।

बेगी सी ढोला खाटू मैं जाऊँ, श्याम धणी रा दरशण पाऊँ,
म्हाने साँवरे की-२, सूरत कामणगारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। ३ ।।

मैं तो इब म्हारे साँवरे के जास्यूँ,'हर्ष' भगत ने भी सागे ले जास्यूँ,
म्हारी श्याम जी सुँ-२, प्रीत पुराणी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चली काँवडियों की टोली...)

चढ़्यो फागणिये को रंग, देखो नाचे अंग अंग,
सारे गोकुल में मस्ती सी छाई रे,
कान्हों बासुँरिया जोर की बजाई रे ।।

करके इशारो कान्हों, राधा ने बुलावे, कान्हुड़े ने देख देख, राधा मुस्कावे,
भरी रंग पिचकारी-२, राधा कान्हुड़े पे मारी-२,
पीली पागड़ी ने केशरिया बणाई रे ।। कान्हों बांसुरिया... ।। १ ।।

रंग में रंग्योड़ो कान्हो, मुरली बजावे, मुरली बजाके राधा-राणी ने रिझावे,
राधा दौड़ी दौड़ी आई-२, सारी सुध बिसराई-२,
ऐसी मीठी मीठी तान सुणाई रे ।। कान्हो बांसुरिया... ।। २ ।।

राधा की चुनरिया जो, सिर सूं सरकगी,
घबराई राधे राणी, कान्हां सूं लिपटगी,
राधे होले सूं शर्माई-२, सारी गूजरियाँ मुस्काई-२,
श्याम राधे जी ने अंग लगाई रे ।। कान्हो बांसुरिया... ।। ३ ।।

सोणी सी या प्यारी जोड़ी, सै के मन भाई,
निजरां उतारो 'हर्ष' लेवो रे बलाई,
माची होली की हुड़दंग-२, बाजे ढफली व चंग-२,
नाचे गोकुल का लोग लुगाई रे ।। कान्हो बांसुरिया... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - बाई सां रा बीरा ....)

चालो जी भगतो, खाटू तो चालाँ जी,
फागणियो आय गयो, थाने श्याम बुलावे जी ।।

केशरिया रंग सूं, भरल्यो पिचकारी जी,
होली खेलण तांई, थाने श्याम बुलावे जी ।।

कोई रंग बिरंगी, ध्वजा उठाल्यो जी,
मेलो देखण तांई, थाने श्याम बुलावे जी ।।

थे ढोलक ढपली, चंग बजाओ जी,
कोई नाचण के ताईं, थाने श्याम बुलावे जी ।।

घर का ने 'हर्ष', सागे ले चालो जी,
झोली भरणे तांई, थाने श्याम बुलावे जी ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - धमाल)

चालो साथिड़ो थे कान्हुड़े को, पेचो रंगस्याँ जी,
गालां उपर श्याम धणी के, केशर मलस्याँ जी ।। टेर ।।

भगतां सागे साँवरियो, फागण में होली खेले जी,
भर पिचकारी कान्हुड़े को, बागो रंगस्याँ जी ।
चालो साथिड़ो.... ।। १ ।।

फागण की मस्ती में सगला, सेवक नाचे गावे जी,
मंदरिये के आगे चालो, गिन्दड़ करस्याँ जी ।
चालो साथिड़ो.... ।। २ ।।

ठण्डी ठण्डी पुरवाई, हिवड़े में आग लगावे जी,
चरणां के अमृत सूं मनड़ो, ठण्डो करस्याँ जी ।
चालो साथिड़ो.... ।। ३ ।।

भगतां पर यो श्याम रंगीलो, निज को रंग चढ़ावे जी,
प्रेम रंग की 'हर्ष' चाल के, बिरखा करस्याँ जी ।
चालो साथिड़ो.... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चाल चन्दा डागलिये पर)

चाल गोरी फागणिये में दोनू खाटू चालां ऐ,
कोई झुक झुक धोक लगास्याँ ऐ बाबा के ।।
थारे सागे खाटू चालूँ फागणिये में ढोला जी,
कोई गठजोड़े सूँ जास्याँ जी बाबा के-२... ।। टेर ।।

दर्जीड़े के जाकर थे निशान सिमाल्यो जी,
कोई मंदिर शिखर चढ़ास्याँ जी बाबा के... ।। १ ।।

पंसारी के जाकर ढोला मेवा मिसरी ल्याज्यो जी,
कोई जाकर भोग लगास्याँ जी बाबा के ...।। २ ।।

हलवाई से देसी घी का लाडू थे बणवाल्यो जी,
कोई सवामणी म्हे लगास्याँ जी बाबा के...।। ३ ।।

सुनारा सूं 'हर्ष' जाके, छत्तर थे ले आज्यो जी,
कोई दर पे जाय चढ़ास्याँ जी बाबा के...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चिरमी)

चाव चढ़यो है मोकलो जी-२,
कोई नाचे भगत अपार,
बाबाजी थारे किर्तन में ।। टेर ।।

सोणो सो दरबार लग्यो जी, फूलां रो सिणगार सज्यो जी,
कोई उड़ रह्या इत्तर फुहार, बाबाजी थारे किर्तन में ।। १ ।।

टाबरिया थारी जोत जगाई, भोग लगायो धोक लगाई,
कोई गावे मंगलाचार, बाबाजी थारे किर्तन में ।। २ ।।

ग्यारस की या रात सुहाणी, सेवकियां री प्रीत पुराणी,
कोई हो रही जै जै कार, बाबाजी थारे किर्तन में ।। ३ ।।

'हर्ष' बजावां चंग सुरीला, थाने रिझावाँ श्याम रंगीला,
कोई निरखां बारम्बार, बाबा जी थारे किर्तन में ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सिर पर टोपी लाल...)

चालो भगतो बाट उडीके, श्याम धणी दातार,
बुलावे खाटू में ।। टेर ।।

फागण को मेलो आयो, बाबा को हेलो आयो, सुणले रे भायला,
बेगो सो करले त्यारी, मतना लगावे देरी, सोचे के बावला,
भर देसी भण्डार तेरा यो सांवरियो सरकार ।।
बुलावे खाटू में... ।। १ ।।

मेलो भर्‌यो है भारी, ध्यावै है दुनिया सारी, श्याम सरकार ने,
मंशा पुरावे भारी, विपदा मिटेगी सारी, श्याम दरबार मे,
मतना करे उंवार, भायला जाके हाथ पसार ।।
बुलावे खाटू में... ।। २ ।।

मित्र मण्डल की गाडी, हावड़ा में आके लागी, बैठ जरा चालके,
'हर्ष' पजामा चोला, पेटी में सोणा सोणा, लेले तू घाल के,
आयो है फरमान, उठाले हाथां माहीं निशान ।।
बुलावे खाटू में...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - पणिहारी)

चंग मजीरा बाज रहया जी ''कोई नाचे नौ नौ ताल"-२
घूमर घाले जी सेवक श्याम का-२ ।। टेर ।।

फागण की छाई है बहार जी, ''उड़े रंग गुलाल"-२
धूम मचावे जी सेवक श्याम का-२ ।। १ ।।

हाथाँ के माँही ले निशान जी, ''चाले टोल्याँ लेके आज"-२
ठुमका लगावे जी सेवक श्याम का-२ ।। २ ।।

इत्तर की होवे रे बोछार जी, ''देखो किर्तन माँही आज"-२
भजन सुणावे जी सेवक श्याम का-२ ।। ३ ।।

''हर्ष" सलूणो लागे साँवरो जी ''लेवो निजराँ उतार"-२
शीश झुकावे जी सेवक श्याम का-२ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल...)

चंग बाजे रे चारु मेर, ल्यो आय गयो फागणियो,
गूंजे रे भजनां की टेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। टेर ।।

कार्तिक शुक्ला ग्यारस पाछे, गली गली में सेवक नाचे,
आई नाचण की बेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। १।।

घर घर किर्तन होवण लाग्या, खाटू जावण का दिन आग्या,
होल्यो थे भगतां के लेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। २।।

श्याम मगन है दुनिया सारी, श्याम निशान की करके त्यारी,
बेगा उठाल्यो कांई देर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। ३।।

हेलो मार के श्याम बुलावे, 'हर्ष' श्याम की गाड़ी जावे,
पाछे चालोगा कद फेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। ४।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : श्याम थारी ओल्यूं आवे जी...)

छमा छम घुँघरूं बाजे जी,
ढुमक ढुमक कर बाबा थारा सेवक नाचे जी ।। टेर ।।

रतन सिंहासन आप विराजो, खाटू का सरदार, साँवरा...
केशरियो टीको माथे पर गल बैजन्ति हार,
कानां में थारे कुण्डल साजे जी ।। १ ।।

चम्पा जूही और मोगरा गजरां की भरमार,साँवरा...
पचरंगी बागे पर होवे इत्तर की बौछार,
शीश थारे मुकुट विराजे जी ।। २ ।।

सुरंगा सी झाँकी ने बाबा निरखां बारम्बार, साँवरा...
जादुगारी ई चितवन पर 'हर्ष' भगत बलिहार,
म्हाने तो सुपणो सो लागे जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्जः रंग मत डारै रे सांवरिया)

छम छम नाचे रे साँवरिया, तेरो लीलो नाचे रे
गल पटिये रा रुण झुणिया तो, रुण झुण बाजे रे ।। टेर ।।

लीलो रंगीलो तेरो भगतां रे मन भायो रे-२,
ठुमक ठुमक कर नाचे कैसो रंग जमायो रे ।। १ ।।

होय मतवालो छैलो हिन हिन करतो चाले रे-२,
श्याम धणी के मंदरिये में घूमर घाले रे ।। २ ।।

श्याम बिहारी तेरो लीलो जग सूं न्यारो रे-२,
उछल उछल कर नाचे म्हाने लागे प्यारो रे ।। ३ ।।

श्याम सलूणो बैठ्यो मंद मंद मुस्कावे रे-२,
'हर्ष' तेरे लीले पर बाबा वारी जावे रे ।। ४ ।।

(तर्ज - गोरा गोरा गाल)

छुक छुक करती रेल गाड़ी, खाटू कानी चाली जी-२
कि जै जै कार गुंजाओ जी बाबा की-२, कोई.... ।। टेर ।।

सबसूं ऊँचा श्याम धणी ने सेवक ल्याय बिठाया,
बाबाजी की करे आरती छप्पन भोग लगाया,
गूँजे बाबा की जैकार, मुल्कै बैठ्यो लखदातार-२
थारी भोत घणी सकलाई जी बाबाजी ।। १ ।।

ढोलक ढ़फली चंग मजीरा, सेवक आज बजावे,
झूमे नाचे भजन सुणावे, ठुमका घणा लगावे,
छाई फागण की बहार, होवे इत्तर की बौछार-२
थारी जै जै कार लगाई जी बाबाजी ।। २ ।।

भाँत भाँत का टेसण आवे, आवे है नर नारी,
श्याम धणी के सेवकियाँ की, सेवा होवे भारी,
माचे होली की धमाल, उड़े रंग और गुलाल-२
'हर्ष' म्हाँ पर मस्ती छाई जी बाबाजी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्जः ताऊ बाँधले सामान)

छोटा छोटा हाथां से निशान चढ़ाऊँगा-२,
ओ मम्मी, करदे तू तैयार मैं तो खाटू जाऊँगा ।। टेर ।।

गुल्लक तोड़के पीसा काडया, रेशमी कपड़ो ल्यायो,
छोटी सी इक डांडी लेकर, एक निशान बणायो,
रिगंस सू डैडी के सागे पैदल जाऊगाँ-२ ।। १ ।।

भांत भांत का रंग मंगादे, भरस्युं मै पिचकारी,
फागण के मेले में जाके, रंगस्युं श्याम बिहारी,
सांवरिये के गालां उपर रंग लगाऊगाँ-२ ।। २ ।।

चिंकी-पिंकी चुन्नू-मुन्नू, सगला खाटू जावे,
मेरी भी मां करदे त्यारी, मेरो जी ललचावे,
यार भायला के सागे जा, मौज उड़ाऊँगा-२ ।। ३ ।।

पाछो आकर करूँ पढ़ाई, चोखा नम्बर ल्याऊँ,
मेरिट लिस्ट में अबकी मम्मी, मेरो नाम लिखाऊँ,
''हर्ष'' सांवरे की किरपा सूं, अव्वल आऊँगा ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(धमाल)

छुट्टी देदे साहुकार मन्ने खाटू जाणो है,
फागणिये में श्याम धणी सूं कोल निभाणो है ।। टेर ।।

कोल कर्‌यो थो श्याम धणी सुं हर फागण मै आस्युँ जी,
फागण की ग्यारस ने जाके शीश झुकाणो है ।। १ ।।

दो महनां की तनखा मन्ने आज अगाऊ दे दे रे,
खीर चूरमो सवामणी को भोग लगाणो है ।। २ ।।

एक बरस तक सेठ तेरे सूं छुट्टी कोन्या मांगुला,
अगले फागणिये तक तेरो हुकम बजाणो है ।। ३ ।।

पौ बाराह हो जावेला तु मेरे सागे चाल जरा,
सेठां को बो ''हर्ष'' बावला सेठ पुराणो है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : लाँग ग्वाचा....

जद जद चानण ग्यारस आवे, खाटू में मेलो भर जावे,
बैठ्यो बैठ्यो माल लुटावे रे, म्हारो श्याम रंगीलो ।। टेर ।।

मकराणे को भवन निरालो,
सजधज बैठ्यो खाटू वालो,
मंद मंद मुस्कावे रे ।। १ ।।

श्याम रंगीलो म्हारो लखदातारी,
अरज लगावे दुनिया सारी,
सैं की आस पुरावे रे ।। २ ।।

ग्यारस की देखी सकलाई,
बिन बोल्यां होवे सुणवाई,
साँचो परचो दिखावे रे ।। ३ ।।

''हर्ष'' धणी के मन जो भावे,
ग्यारस ने ऊँको चैक बणावे,
बारस मोहर लगावे रे ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - चिरमी)

जोग लिख्यो है खाटू जाणे को -२,
भाया बेगो-बेगो खाटू चाल, उडिके बाबो श्याम धणी ।। टेर ।।

रंग अबीर सूं भर लै झोली, कान्हुड़े संग खेलो होली,
भाया रंगणा है, भगतां रा गाल ।। १ ।।

ढोलक डफली चंग बजाओ, मंदरिये में धूम मचाओ,
भाया खाटू मांही, मची रे धमाल ।। २ ।।

फागणिये में श्याम बिहारी, माल लुटासी मोकलो भारी,
भाया कर देसी, मालामाल ।। ३ ।।

'हर्ष' श्याम की ध्वजा चढ़ाजे, म्हारे नाम की धोक लगाजे,
भाया जावेलो तू, सालूं साल ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्जः मातारानी फल देगी)

जिनको बुलाये लखदातार
वो फिर नाचे बीच बाजार ।। टेर।।

फागुन में जो रंग बरसे,
जाने को ये मन तरसे-२,
आ जाये जिसका समाचार ।। १।।

जिसका बुलावा आता है,
श्याम मगन हो जाता है-२,
भूल के अपना कारोबार ।। २।।

ले निशान दर वो जाये,
मन इच्छा फल वो पाये,
झोली भर देता सरकार ।। ३।।

''हर्ष'' जो मन से ध्यान धरे,
खाटू को प्रस्थान करे-२,
उनको हो जाता दीदार ।। ४।।

तर्ज : रंग मत डारे रे सांवरिया..

झण्डो नाचे रे साँवरिया थारो फागणिये के माय,
बाबा थारा सेवकियाँ के हाथां में लहराय ।। टेर ।।

श्याम निशान, उठा हाथां में,
बडा बडेरा बच्चा जावे खाटू जी के माय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। १ ।।

झाझं मजीरा बाजे, चंग सुरीला,
नाच कूदता जासी थारे मंदरिये के माय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। २ ।।

मेलो भरयो है थारो, रंग रंगीलो,
रंग बिरंगी ध्वजा ले चाले हाथा में उठाय।।
झण्डो नाचे रे... ।। ३ ।।

कमर में फेटो, हाथां में डोरी,
''हर्ष'' साँवरा मीठा मीठा भजन सुणाय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। ४ ।।

(तर्ज : मोरिया...)

दोहा : चिट्ठी को तो नाही भरोसो सेठ सांवरा म्हाने ।
म्हारे मन का भाव जाणियो आज लिखावां थाने ।।

डाकिया, लिखदे परवानो म्हारे श्याम ने,
ओ म्हाने थारे बिना, ओल्यूं आवे सेठ सांवरा,
लिखदे परवानो म्हारे श्याम ने ।। टेर ।।

पहल्यां तू लिखदे जय श्री श्यामजी,
म्हे तो चरणां माही, शीश झुकावां सेठ सांवरा, लिखदे...।।

हिवड़े बस्यो रे म्हारे सांवरो,
ओ म्हाने बाबा थारी, याद सतावे सेठ सांवरा, लिखदे...।।

लिखदे बाबा थे म्हाने देखल्यो,
ओ थारे भगतां सूं, कैयां रुठ्या सेठ सांवरा, लिखदे...।।

म्हारी बाबा सूं लिखदे विनती,
चिट्ठी पाछी दीज्यो, म्हाने भी थे सेठ सांवरा, लिखदे...।।

लिखदे रे म्हारो बुरो हाल है,
''हर्ष'' भगतां रा, कष्ट मिटाओ सेठ सांवरा, लिखदे...।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - पल्लो लटके...)

झोली भरसी ओ भाया झोली भरसी,
खुल्यो है बाबा को दरबार थारी झोली भरसी ।। टेर ।।

श्याम निशान उठा हाथां में जैकारो गुँजाओ,
रस्तो पल में कट जासी जी मतना देर लगाओ ।। १ ।।

ऐसो लखदातारी म्हे तो नाय सुण्यो ना देख्यो,
पलक मूंदता बदले थारो यो करमां को लेखो ।। २ ।।

कान्हुड़े की मूरत भगतों हिवड़े बीच बसाल्यो,
सालूंसाल बुलासी थाने एक निशान चढ़ाल्यो ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहवे फागण के माँही खाटू जो भी जावे,
श्याम धणी की किरपा सूँ बो बैठ्यो मौज उड़ावे ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज डोरी खेंच के राखिजो...)

ढ़ीली छोड़ियो ना डोरी,सम्भालता चालो,
हाथां में निशान लेके नाचता चालो ।।

पैदल चाले पगां चलणिया, पसर के जावे पेट पलणिया,
थे भी टोलियाँ बणाके घूमर घालता चालो ।।

थक जावे कोई भगत घणेरो, टाबर हो या बड़ो बडेरो,
बाँकी थाम के कलाई सागे चालता चालो ।।

माँ भैणा को साथ न छोड़ो, श्याम निशान ले मतना दौड़ो,
सगला सांवरे ने भजन सुणावता चालो ।।

श्याम ध्वजा की गरिमा जाणो, जूठो हाथ कदे ना लगाणो,
''हर्ष'' धरती से बचाके थे उछालता चालो ।।

(धमाल)

तंगी मेट द्यो सांवरिया करद्यो रुपियाँ की बरसात,
श्याम खजानो मैं भी बाबा, लूटूं दोनुं हाथ ।। टेर ।।

जी मैं आवे हर ग्यारस पर, मैं भी खाटू आऊँ जी,
खाली जेब दिखावे मन्ने, मेरी के औकात ।। १ ।।

चाव घणो है मैं भी थारो, मंदरियो सजवाऊँ जी,
बिना दाम के कोन्या बाबा, मेरे बस की बात ।। २ ।।

मेरो भी जी चावे थाँपे, हीरा मोती वारुँ जी,
मन तो भोत बड़ो थे दीन्यो, पर खाली है हाथ ।। ३ ।।

समरथ करद्यो मैं भी थाने, छप्पन भोग जिमाऊँ जी,
'हर्ष' भगत की इतणी अरजी, सुणियो दीना नाथ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चांदणिये में चमके चीर...)

तिरछा तिरछा निरखो श्याम, होले होले मुल्को श्याम,
क्यूं म्हारा, कान्हुड़ा ऽऽओ कान्हुड़ा ऽऽ
सलूणो लागे म्हाने सांवरो ।। टेर ।।

गल वैजन्ति हार बिराजे, केशर को है टीको,
घुंघराली लटकण के स्यामी, सै क्यूं लागे फीको,
थारे मोर छड़ी, हाथां में पड़ी-२,
कोई बागो घेर घुमेर, कान्हुड़ा ... ।। १ ।।

कानां माही कुण्डल साजे, लीले की असवारी,
पचरंगी पेचे ने निरखे, बाबा दुनिया सारी,
ओ श्याम धणी, म्हारो घड़ी घड़ी-२,
मनड़े रो नाचे मोर, कान्हुड़ा... ।। २ ।।

लाल गुलाबी होठं रसीला, आँख्या रस बरसावे,
श्याम सलूणी चितवन थारी, भगतां ने भरमावे,
फूलां री लड़ी, थारो हार बणी-२,
थे ''हर्ष'' घणा चितचोर, कान्हुड़ा... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : म्हारा लीले रा असवार...)

थारे भगतां री पुकार, म्हारा सांवरिया सरकार,
थे तो बेगा बेगा आओ जी, आओ जी कान्हा ।। टेर ।।

बाबा थारे सेवकां ने, किर्तन आज करायो,
रूप सलोणो देखबा ने, मनड़ो है हर्षायो,
म्हारा सांवरिया हजूर, थाने देखांला जरूर,
म्हाने दरश दिखाओ जी, दिखाओ कान्हा... ।। १ ।।

भगतां रे संग लूक मीचणी, कान्हुड़ा क्यूं खेलो,
बेगा आओ सांवरिया, म्हारो हिवड़ो मारे हेलो,
बरसे आंखड़ल्यां सूं नीर, उठे मनड़े में पीड़,
म्हाने घणो ना सताओ जी, सताओ ना कान्हा... ।। २ ।।

खीर चूरमो, फल और मेवा, छप्पन भोग सजायो,
भगतां रे घर बैठ सांवरा, रूच-रूच भोग लगाओ,
खाकर नागरियो थे पान, ''हर्ष'' भगतां रो मान,
कान्हा आज बढ़ाओ जी, बढ़ाओ कान्हा... ।। ३ ।।

तर्ज : तेरे होठो के दो फूल...

थारो फागणियो रंगीलो मन भावे,
म्हाने बाबा थारी यादड़ली सतावे,
थारे मेले में खाटू ''आवाँगा'' -२ ।। टेर ।।

म्हे तो श्याम निशान उठाकर, म्हारे बाबा की जय जय गुंजास्याँ,
भगतां के सागे मिलकर, थारे नाच कूदता आस्याँ,
थारी चौखट पे सरकार, म्हे तो आस्याँ सपरिवार,
थारे शिखर निशान ''चढ़ावाँगा'' -२ ।। १ ।।

ग्यारस ने रात्युं जागां, थारी पावन ज्योत जगास्याँ,
बारस ने न्हाय धोयकर, थारे चरणां धोक लगास्याँ,
ल्यावाँ चूरमे का थाल, सागे पंचमेला की दाल,
थारे मंड में भोग ''लगावाँगा''-२ ।। २ ।।

थारे मुखड़े पे साँवरिया, म्हे तो रंग अबीर लगास्याँ,
थांसु होली खेलण तांईं, थारे मंदरिये में आस्याँ,
खेलां रंग और गुलाल, करस्याँ मंदिर थारो लाल,
थाने होली म्हें श्याम ''खिलावाँगा'' -२ ।। ३ ।।

मेले की याद संजोकर, म्हें राजी खुशी घर आस्याँ,
म्हाने बेगा खाटू बुलाओ, चरणां में अरज लगास्याँ,
म्हारी अरजी पे सरकार, करियो थोड़ो थे विचार,
''हर्ष'' थारा ही गुण म्हे ''गावाँगा'' -२ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बीरा बेगा बेगा थे तो...)

थारो सोणो सोणो गजरो बणाया,
थाने बनड़ो सो आज बणाया जी ।। टेर ।।

चुन चुन के कलियां ल्याया, प्यारो इक हार बणाया,
ज्यां में लाल गुलाब लगाया जी ।। थारो सोणो... ।। १ ।।

अंतर केशर छिड़कायो, भीणो - भीणो - महकायो,
गोटा तारा में गुंथाया जी ।। थारो सोणो... ।। २ ।।

यो लाल गुलाबी गजरो, सांवलियो पहर के संवर्‌यो,
काले ने लाल बणाया जी ।। थारो सोणो... ।। ३ ।।

मुल्को थे ''हर्ष'' मुरारी, थां पर जावां म्हे वारी,
थाने निरख निरख सुख पाया जी ।। थारो सोणो... ।। ४ ।।

(तर्ज : ताऊ बाँध ले सामान...)

देख देख भगतां ने मन में लाडू फुटे सै-२,
इब तो सुपणे मैं भी स्याणी मन्नै खादू दिखे सै ।। टेर ।।

काम काज में जी ना लागे, मेला नेड़े आग्या,
देख जाटणी मेरे पै के, रोग कसुता लाग्या,
खेतां मांही काम करूं तो देही टुटे सै,
इब तो सुपणे... ।। १ ।।

ऐसा प्रेम बढ़ाया इसतै, मेरा बैरी बणग्या,
लाख भुलाणां चाहूँ पर यो, गहरा भीतर बड़ग्या,
इब तो मेरा जीवन भर ना पिण्डा छुटे सै,
इब तो सुपणे... ।। २ ।।

साँची बात बताऊँ इसतै, प्रेम कदे ना करियो,
'हर्ष' कदे ना छोडेगा यो, चक्कर में ना पड़ियो,
देख साँवरा बान्ध लिया, भई मन्ने खुँटे सै,
इब तो सुपणे... ।। ३ ।।

(तर्ज : घड़लो थामले देवरिया...)

देखो श्याम की अटरिया, पर लहरावे निशान,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। टेर ।।

टोल्याँ की टोल्याँ लेकर लाम्बी लाम्बा झण्डी-२, कोई आवे है ऽऽऽऽ
कोई ल्यावे म्हारे श्याम जी को प्यारो सो निशान,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। १ ।।

रींगस सूँ लाखाँ सेवक खाटू पैदल आवे-२, कोई गूँजे है ऽऽऽऽ
कोई गूँजे असमाना में श्री श्याम की जैकार,
लीले वाले साँवरे की या ही पिछाण ।। २ ।।

फागण में श्याम जी को मेलो भारी लागे-२, कोई उड़े है ऽऽऽऽ
कोई उड़े देखो खाटू माँही रंग गुलाल,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। ३ ।।

'हर्ष' भगत सारा झूमे नाचे गावै-२, कोई माचे रे ऽऽऽऽ
कोई माचे देखो खाटू जी मैं होली की धमाल,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : धमाल)

धीमो चाल रे साथिड़ा, म्हारा पगल्या दुखे रे,
लाय बरसती भरी दोपहरी, मुण्डो सुखे रे ।। टेर ।।

एक हाथ में ध्वजा श्याम की, दूजे हाथ में डोरी रे,
खेंच के चालु आंगलिया की, पोरी धूजे रे ।। १।।

तू तो जबर जवान बावला, मैं तो ठहस्यो बूढो रे,
जोर लगाकर चाल्याँ सै, पिण्डलिया सूजे रे ।। २।।

काली कोसां खाटू हाले, श्याम धणी को ठीडो रे,
एक मिनट में भगत बिचारो, कइयां पुगे रे ।। ३।।

सगला ने यो पार लगावे, देव बड़ो दातारी रे,
'हर्ष' भला अइयाँ ही कोनी, दुनिया पूजे रे ।। ४।।

तर्ज : उमराव

नन्दलाल तेरो माखन मेरो खाग्यो ऐरी माँ,
तेरो लाडलो लालो ऐरी माँ ।। टेर ।।

घर में मेरे बड़ गयो, आधी रात के माय,
छीकें उपर चढ़ गयो, ग्वाल बालिया ल्याय,
नन्दलाल मेरी मटकी फोड़ गिराग्यो ऐरी माँ ।। १ ।।

जांवती देखके एकली, रोकी तेरो लाल,
जुल्मी चिटली आंगली, गालां में दी घाल,
नन्द लाल मेरो सारो दही खिंडाग्यो ऐरी माँ ।। २ ।।

न्हाबा ताईं कुण्ड में, उतरी बृज की नार,
चोरी चुपके आ गयो, बैरी म्हारे लार,
नन्दलाल म्हारी अँगिया-चोली चुराग्यो ऐरी माँ ।। ३ ।।

रास रचाओ जोर को, पूनम शरद की रात,
''हर्ष'' एक कान्हुड़े संग, एक गूजरी साथ,
नन्दलाल तेरो लीला गजब दिखाग्यो ऐरी माँ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : होलिया मे उड़े रे...)

नाचेगें आज सारी रात, धिनक धिन ता थैया,
झुमेगें बाबा जी के साथ, धिनक धिन ता थैया ।। टेर ।।

ढ़ोल नगाड़े ढ़म ढ़म बाजे, सेवक सारे छम छम नाचे,
ठुमका लगाये सारे आज, धिनक धिन ता थैया ।। १ ।।

श्याम धणी का उत्सव आया, भगतों ने बाबा को रिझाया,
भजनों की हुई बरसात, धिनक धिन ता थैया ।। २ ।।

खाटू से श्री श्याम पधारे, भगतों के हुए वारे न्यारे,
झूमे है सारी कायनात, धिनक धिन ता थैया ।। ३ ।।

''हर्ष'' नजारा है बड़ा प्यारा, चमक उठा तकदीर का तारा,
बाबा से हुई मुलाकात, धिनक धिन ता थैया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : दर्जी सीम दे निशान)

फागणिये की मस्ती में, नाचागां गावागां-२
होली खेलस्याँ ओ बाबा थारे रंग लगावागाँ ।। टेर।।

भांत भांत का रंग मंगाया, सोने की पिचकारी,
बाबा जी के रंग लगावां, सगला बारी बारी,
ना मानो तो बाबा थाने आज मनावागाँ ।। १ ।।

फाग सुणावां धूम मचावां, एक सुणां ना थारी,
प्रेम रंग में रंग देस्यां, थाने म्हें आज बिहारी,
ना छूटेलो ऐसो पक्को रंग लगावागाँ ।। २।।

ढ़ोलक ढ़पली चंग बजावां, बाबा ने रिझावाँ,
ठण्डाई में घोट घोट के, थाने भंग पिलावाँ,
घणे चाव सूं थाने छप्पन भोग जिमावागाँ ।। ३ ।।

बाबा जी के भांग चढ़ी जी, चिमटो ''हर्ष'' बजावे,
भगतां सागे नाचे गावे, अमृत रस बरसावे,
मस्ती के पावन सागर में गोता खावागाँ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेला दिलों का आता है...)

फागुन का मेला आता है हर साल,
आके चला जाता है,
खाटू के नजारे, लगते बड़े प्यारे,
सजके वहाँ बैठे, हारे के सहारे ।। टेर ।।

ढोलक, बाजे, और बाज रहे हैं चंग,
सेवक, नाचे, सब इक दूजे के संग,
जग वाले देते हैं मेले की मिसालें,
आँखों में घूमती है खाटू की धमालें,
मेला धमालों का आता है हर साल ...।। १ ।।

तू भी, चल रे, मौका ना मिलेगा कल,
रस्ता, देखे, खाटू वाला हर पल,
एक बार चल कर देखले नजारे,
भूल नहीं पायेगा खाटू की बहारें,
मेला बहारों का आता है हर साल ...।। २ ।।

लीलें, वाले, की लीला चलके देख,
पल में, बदले, तेरी किस्मत का लेख,
दोनों हाथों बैठा है सांवरा लुटाने,
लूटले तू जाकर श्याम के खजाने,
मेला खजानों का आता है हर साल ...।। ३ ।।

बारस, आती, आँखे ये बहे कल कल,
बच्चे, बिछड़े, जब बाबा से उस पल,
करते हैं 'हर्ष' सारे आने के फिर वादे,
दिल में संजोके लाते मेले की वो यादें,
मेला यादों का आता है हर साल...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : धरती धोरां री...)

फागण पाछे श्याम बिहारी, म्हानै याद सतावे थारी,
झर-झर आँख्या बरसे म्हारी, ओल्यूं आवे जी..।। टेर ।।

फागणिये में खेल्यो रंग, होऽऽऽ-२, माची होली की हुड़दंग,
बाज्या ढोलक, ढफली, चंग, ओल्यूं आवे जी-२,
इब तो फीको-फीको लागे, कार्तिक पाछे सगला जागे,
ओज्यूं जमघट थारे लागे, ओल्यूं आवे जी...।। १ ।।

गूंजे काना में जयकारा, होऽऽऽ-२, थारे भजनां का फटकारा,
बरसी अमृत रस की धारा, ओल्यूं आवे जी-२,
इब तो सोग्या सेवक थारा, खोग्या काम काज मैं सारा,
ठण्डा पड़ गया किर्तन थारा, ओल्यूं आवे जी...।। २ ।।

थारे भजनां की बै कड़ियां, होऽऽऽ-२, ज्यामें भाव भर्‌या था बढ़िया,
कइयां टूटी सगली लड़ियां, ओल्यूं आवे जी-२,
सोया भगतां ने जगाओ, भजनां की रमझोल मचाओ,
बोले 'हर्ष' थे बेगा आओ, ओल्यूं आवे जी...।। ३ ।।

तर्ज : पीलो

बनड़ो सो बणकर कान्हो, सिंहासन बैठ्यो जी,
तो अईयाँ को कुण सिणगार करायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। टेर ।।

घेर घुमेरो बागो, तन थारे सोवे जी,
तो अईयाँ को बागो कान्हा कुण तो पिरायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। १ ।।

केसरियो टीको थारे, माथे पर सोवे जी,
तो अईयाँ को टीको थारे कुण तो लगायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। २ ।।

मोर मुकुट में थारे, सोवे किलंगी जी,
तो अईयाँ को सोवणो सो कुण तो सजायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' सलूणो देखो, सज धज के बैठ्यो जी,
तो थारो यो रूप सुहाणो, भगतां न सुहायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ग्यारस चानण की आई...)

बरसां सुं यो दिन आयो, हिवड़े में हेत समायो,
ठाकुर पधार्‌या म्हारे आंगणा ।। टेर ।।

मोर मुकुट में थारे, ''सोवे किलंगी जी''-२,
घेर घुमेरो बागो, ''आभा सतरंगी जी''-२,
सेवकिया चंवर ढुलावे, सगला मिल महिमा गावे,
साज सुरीला बाजे बाजणा ।। १ ।।

थारे गले में सोवे, ''हार हजारी जी''-२,
फूलां का गजरा जांकी, ''शोभा है भारी जी''-२,
इत्तर की बरखा होवे, झांकी सैं को मन मोवे,
नर-नारी आया म्हारे बारणा ।। २ ।।

ऊँचे आसण पर बाबा, ''श्याम बिराजे जी''-२,
कानां में सोणा सोणा, ''कुण्डलिया साजे जी''-२,
भगतां सू प्रीत निभाई, अरजी की करी सुणाई,
'हर्ष' पधार्‌या म्हारे पावणा ।। ३ ।।

(तर्ज : बिन्दिया चमकेगी...)

बंशी बाजेगी, राधा नाचेगी,
चाहे जग रूठे ते रूठ जाये ।। टेर ।।

तेरी बंशी बड़ी जादूगारी जुलम मेरे साथ करे-२,
सारी रात जगाये बैरन मेरी नींद चुराये,
मैं तो नाचूंगी-२, चाहे छत टूटे तो टूट जाये ।। १ ।।

राधेरानी हुई रे दिवानी बिरज के सांवरिया-२,
मन ही मन वो चाहे लेकिन तुझको बोल न पाये,
मैं तो चाहूँगी-२, चाहे सब रूठे तो रूठ जाये ।। २ ।।

''हर्ष'' बोले मुरलिया से कान्हा बचा ना कोई आज तलक-२,
भगतों के ये होश उड़ाये सारी रात नचाये,
सेवक नाचेंगे, छम छम नाचेंगे, चाहे घर छूटे तो छूट जाये ।। ३ ।।

(धमाल)

बाबा श्याम का निशान उड़े रे असमान,
बेगो सो तू चाल बावला के सोचे नादान ।। टेर ।।

चारूं कानी रंग रंगीली श्याम ध्वजा लहरावे जी
श्याम धणी के दरसन तांई चाल्यो सकल जहान ।। १ ।।

पगां उघाणा चाले कोई कोई पेट पिलाणी जी
बड़ा-बडेरा सागे चाले टाबरिया नादान ।। २ ।।

मस्त होयकर सगला नाचे चंग मजीरा बाजे जी
भजनां को रसपान करे जी सगला एक समान ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम का जै जै कारा आकाशा में गूँजे जी
फागण के मेले की भगतो याही एक पिछाण ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - भरबा दे रे मदन गोपाल)

बाजण दे रे नन्दजी का लाल, मुरली बाजण दे,
नन्दरानी का बाल गोपाल, मुरली बाजण दे ।। टेर ।।

तान सुणी तो झट आई मैं दौड़ती-२,
रोतों छोड आई घरां मैं तो लाल ।। १ ।।

छलक गई रे मेरी पाणी भरी मटकी -२,
मैं तो भूली जग जंजाल ।। २ ।।

भूल गई रे कान्हा दही मैं बिलोणो-२,
मेरो हो गयो हाल बेहाल ।। ३ ।।

रंग चढ़यो रे कान्हा मेरे तो मोकलो-२,
इब नाचूं मैं नौ नौ ताल ।। ४ ।।

'हर्ष' कान्हुड़ा मैं तो होगी रे बावली-२,
बैरी हिवड़ो लियो तू निकाल ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरा बाबू छैल छबिला...)

बेगी चाल जाटणी श्याम धणी के जाणां सै,
रोट बणाले, चूंटिया लगाले, मिलके खाणा सै ।। टेर।।

फागण में श्याम धणी का, मेला लागे भारी,
तन्ने सागे ले चालूं, बेगी करले त्यारी,
चूरमा बणाले, मेवे मिलाले, भोग लगाणा सै ।। १ ।।

बणिये के जाकर स्याणी, रेशमी कपड़ा ल्याऊँ,
मैं श्याम धणी का सोणा, एक निशान सिमाऊँ,
करले तू त्यारी, श्याम की अटारी, जाय चढ़ाणा सै ।। २ ।।

मैं दूध काढ कर ल्याया, तैं ताजा दही जमादे,
बाबा मखनी का भूखा, जाकर के भोग लगादे,
भजन सुणाके, ठुमके लगाके, श्याम रिझाणा सै ।। ३ ।।

खाटू में रंग उड़ेगा, फागण की रुत में भारी,
तैं 'हर्ष' चाल मेरे सागे, रंगणा सै श्याम बिहारी,
होले तू सागे, बाबा के जाके, रंग लगाणा सै ।। ४ ।।

(तर्ज - मोरिया)

भायलो, हेलो लगावे देखो ''साँवरो"-३,
चालो चालो रे-३, मेले के मांही आज भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो ।। टेर ।।

भायलो, फागण को मेलो भर्‌यो जोर को,
लेल्यो लेल्यो रे-३, हाथां में थे निशान भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। १ ।।

भायलो, खाटू में जाके होली खेलस्याँ,
भरल्यो भरल्यो रे-३, झोली में रंग गुलाल भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। २ ।।

भायलो, ढफली-मजीरा चंग बाजर्‌या,
घालो घालो रे-३, खाटू में घूमर जाय भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। ३ ।।

भायलो, ''हर्ष" भगत ने मतना भूलज्यो,
उठे उठे रे-३, हिवड़े में म्हारे हूक भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। ४ ।।

(तर्ज : उड़ उड़ रे म्हारा काला रे कागला...)

भक्तों रे चालो श्याम की नगरिया-२,
हाथा माहीं निशान उठा, श्याम धणी को ध्यान लगा,
चालो रे... ।। टेर।।

रंग रंगीलो फागण आयो, श्याम धणी तन्ने आज बुलायो,
बेगो बेगो खाटू जा, श्याम धणी को ध्यान लगा ।। १।।

रंग अबीर से भरल्यो झोली, बाबा से जा खेलो होली,
सांवरे के मुख पे गुलाल लगा, श्याम धणी को ध्यान लगा ।। २।।

केशर की भर के पिचकारी, रंग दीजे म्हारो श्याम बिहारी,
मेले माही धूम मचा, श्याम धणी को ध्यान लगा ।। ३।।

श्याम धणी के पैदल चालो, पत राखे पत राखण हालो,
'हर्ष' ने भी सागे ले जा, श्याम धणी को ध्यान लगा ।। ४ ।।

(नब्बे करोड़)

भगतां सूं क्यांकी मरोड़ बाबा, दे दे तू नब्बे करोड़ बाबा,
भगतां रो मनड़ो ना तोड़ बाबा, दे दे तू नब्बे करोड़ बाबा ।।

खर्चां को घर में कोन्या ठिकाणो,
मँहगो हुयो तेरो किर्तन कराणो,
सैं की कमर दीन्ही तोड़ बाबा ।। १ ।।

आख्याँ दिखावे घर में लुगाई,
महँगी घणी टाबर की पढ़ाई,
थेली ने तू ढीली छोड़ बाबा ।। २ ।।

रुपिया बिना तेरा दर्शन भी भारी,
रुपिया पिछाणे तेरो पुजारी,
म्हारो भी टाँको तू जोड़ बाबा ।। ३ ।।

दुनिया में सगलो माया को खेलो,
माया बिना ''हर्ष'' माणस है धेलो,
माया ही सैं को निचोड़ बाबा ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(पीपली)

मकराणे को बाबा थारो, देवरो जी,
सिंहासन पर बैठ्यो म्हारो लखदातार ।। टेर ।।

मोर मुकुट सिर सोवे थारे, सोवणो जी,
कानां माही कुण्डलिया है लीले का सवार ।। १ ।।

गल मोतियन की माला मन, मोहणी जी,
बाजुबन्ध में हीरो चमके पालणहार ।। २ ।।

काजल सोवे बाबा थारी, आँख में जी,
लटके थारे सिर पर छत्तर हजार।। ३ ।।

'हर्ष' बिराजे हाथां थारे, मोरछड़ी जी,
झाड़ो देवो टाबरियां ने बारम्बार ।। ४ ।।

(धमाल)

मतना मारो जी मुरारी म्हापे रंग कि पिचकारी,
रस्तो छोड़ो रीस करेगी नणदल रामारी ।। टेर ।।

नई नवेली गूजरी मैं आज बिरज में आई जी,
दोराणी जिठाणी म्हासुं लड़सी जी भारी ।। १ ।।

सखी सहेल्याँ आगे चलगी पण मैं रहगी लारे जी,
रस्तो भूल गई सांवरिया मैं तो बेचारी ।। २ ।।

बालमड़ो मेरो आँख दिखावे जेठ मनै धमकासी जी,
सासु सुसरो ताना देसी म्हाने गिरधारी ।। ३ ।।

पिचकारी सुं तन थे रंगस्यो ''हर्ष'' गूजरी बोले जी,
रोम रोम मेरो रंग्यो पड़यो है थासुं बनवारी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(धमाल)

महिनो फागण को खाटू में रस बरसे रे,
खाटू हालो श्याम धणी भगतां ने निरखे रे ।। टेर ।।

टाबर टीकर बडा बडेरा श्याम निशान ले चाले जी,
आतो देख भगत ने म्हारो बाबो हरखे रे ।। १ ।।

पेट पलणिया पीठ के बल कोई पसर पसर के आवे जी,
पीड़ भगत की देख श्याम का आँसु ढ़लके रे ।। २ ।।

भांत भांत की मंशा लेकर सगला खाटू आया जी,
कुणसे भगत ने के चाये यो बैठयो परखे रे ।। ३ ।।

बारस पाछे ''हर्ष'' श्याम सुं बिदा भगत जद होवे जी,
गले लागकर इक दूजे के सगला बिलखे रे ।। ४ ।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : म्हारी हथेल्यां रे बीच ...)

माची फागण की रमझोल, ''झाला देवे म्हारो कान्हुड़ो'' -२,
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। टेर ।।

ढफली बजाल्यो सागे ठुमका लगाल्यो, ''कोई नाचणिये के'' -२,
सागे सागे ''नाचे म्हारो कान्हुड़ो''-२,
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। १ ।।

श्याम को निशान थारे हाथां में उठाल्यो, ''कोई चालणिये के'' -२,
सागे सागे ''चाले म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। २ ।।

आप भी चालो सारे घर का ने ले चालो, ''कोई जावणिये की''-२,
झोली भगतो ''भरसी म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। ३ ।।

बाबा जी सूं 'हर्ष' होली खेलण तांई चालो, ''कोई खेलणिया के''-२,
सागे होली ''खेले म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। ४ ।।

श्री सर्वदेव वन्दना

(तर्ज : धमाल)

मान्ड्यो श्याम को रंगीलो उत्सव सगला आज्यो रे,
सगला आज्यो, सगला आज्यो, सगला आज्यो रे ।।

एक तो संदेशो जाके गणपत जी ने दीज्यो रे,
उत्सव मांही रिद्ध सिद्ध सागे आता रहिज्यो रे ।। १ ।।

दूसरो संदेशो जाके शंकर जी ने दीज्यो रे,
गोरां, गण और नन्दी सागे आता रहिज्यो रे ।। २ ।।

तीसरो संदेशो जाके रघुनन्दन ने दीज्यो रे,
लिक्षमण, सीता, हनुमत सागे आता रहिज्यो रे ।। ३ ।।

चौथोड़ो संदेशो जाके अटल क्षत्र पै दीज्यो रे,
दुर्गा, काली, उमा, शारदा आता रहिज्यो रे ।। ४ ।।

आखिरी संदेशो जाके सब देवां ने दीज्यो रे,
'हर्ष' श्याम के उत्सव माही बेगा आज्यो रे ।। ५।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : थाने परदे में राखाजी म्हारा श्याम...)

म्हाने तिरछो तिरछो, मतना देखे श्याम,
भगत मर जावे लो ।। टेर ।।
तीन बाण धारी, तीन बाण धारी-२

सिंहासन पर बैठ्यो कान्हो, नैणा तीर चलावे,
भगतां रो मन घायल करके, होले से मुस्कावे,
म्हाने इतणो ना सतावे घनश्याम,
भगत मर जावे लो ।। १ ।।

आज बुलावे थारो सेवक, भगतां के घर आजे,
रूखी सूखी तने परोसूं, घणे चाव सूं खाजे,
म्हारो राखजे ओ कान्हा थोड़ो मान,
भगतो मर जावे लो ।। २ ।।

नानी, नरसी, मीरा, करमा, सबके आडो आयो,
मेरी बरियां बांके छलिया, क्यूं घणो इतरायो,
तेरे ''हर्ष'' ने भी आके तू संभाल,
भगत मर जावे लो ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - धमाल)

म्हारा पण्डित जी म्हारो हाथ देखकर आज बता द्यो जी,
कइयाँ होसी श्याम सै मिलणों, जुगत भिड़ाद्यो जी ।। टेर ।।

श्याम धणी रे दरसण ताईं, मनड़ो म्हारो तरसे जी,
जतन करो थे म्हारी भी या, आस पुराद्यो जी ।। १ ।।

कद आवेली शुभ री घड़ियाँ, कद म्हाने श्याम बुलासी जी,
पूजा पाठ करो पण म्हारो, काम पटाद्यो जी ।। २ ।।

जोग देखल्यो लिख्यो के कोन्या, श्याम को दरसण म्हाने जी,
पत्री म्हारी बाँच के म्हाने, आज सुणाद्यो जी ।। ३ ।।

आडी टेडी हाथ में म्हारे, जाणे कितणी रेखा जी,
मन्तर मार के 'हर्ष' श्याम सै, आज मिलाद्यो जी ।। ४ ।।

(धमाल)

मारी कांकरी कान्हुड़ो मटकी फोड़ दीन्ही माँ,
मैं बरजी तो पकड़ आंगली मोड़ दीन्ही माँ ।। टेर ।।

पाणी भरके आँवती को गेलो मैया रोक्यो ऐ,
हाथ तेरे जुलमी के आगे जोड़ दीन्ही माँ ।। १ ।।

लाखां मिन्नत कीन्ही मैया एक ना मेरी मानी ऐ,
हाल मेरो बेहाल बणाकर छोड़ दीन्ही माँ ।। २ ।।

मटकी उपर मटकी मैया आँख में ऐकें खटकी ऐ,
चार चार मटकी मरजाणो तोड़ दीन्ही माँ ।। ३ ।।

कब्जो भीज्यो चोली भीजी भीज गई माँ साड़ी ऐ,
''हर्ष'' ओढ़णी खेंच निगोड़ो ओढ़ लीन्ही माँ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : धमाल)

माची मंदिर में बाबा जी थारे होली की हुड़दंग,
कोई तो मारे भर पिचकारी, कोई लगावे रंग ।। टेर ।।

केशर चंदन और केवड़ो लाल गुलाल घुलायो जी,
ठण्डाई के मांही मिलाई, आज जरा सी भंग ।। १ ।।

भजना की सुरताल पे सगला, टेर सूं टेर मिलावे जी,
छम छम नाचे मस्ताना, और बाज रह्या है चंग ।। २ ।।

होली की मस्ती में थारो, लीलो घोड़ों झूमे जी
उछल उछल कर नाचे देखो, हो गयो मस्त मलंग ।। ३ ।।

ऐसी होली आज तलक म्हें 'हर्ष' कदे ना देखी जी,
तिरलोकी को नाथ नाच रह्यो, निज भगतां के संग ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : लागे वृन्दावन नीको)

मंदरियो प्यारो प्यारो लागे, बाबा थारो
मंदरियो प्यारो लागे ।। टेर ।।

ऊँचे सिंहासन आप बिराजो, मोर मुकुट सिर साजे ।
बाबा थारो ... ।। १ ।।

मकराणे को बण्यो है देवरो, मोर पपीहो नाचे ।।
बाबा थारो ... ।। २ ।।

केशर टीको मस्तक सोवे,काना कुण्डल साजे ।
बाबा थारो ... ।। ३ ।।

गोपीनाथ जी को माय बसेरो, हनुमत डयोढ़ी आगे ।।
बाबा थारो ... ।। ४ ।।

''हर्ष'' दिवानो शीश झुकावे, श्याम धणी थारे आगे ।
बाबा थारो ... ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(धमाल)

मुख सुं बोल दे सांवरिया तन्ने कुण सजायो रे,
देख तेरे सिणगार ने चन्दा भी शरमायो रे ।। टेर ।।

मोर मुकुट कानां में कुण्डल गल बैजन्ती सोवे रे,
केशरिया टीको माथे पर खूब लगायो रे ।। १ ।।

बाजु बन्द बड़ा ही सोणा हाथ मे कंगन खनके रे,
तु चितचोर चुराके मनड़ो क्युँ मुस्कायो रे ।। २ ।।

पीत वसन पर फैंटो सोवे होठां मुरली प्यारी रे,
जादुगारो रूप निरख मनड़ो हर्षायो रे ।। ३ ।।

नजर सांवरा लग ना जावे ''हर्ष'' बड़ो घबरावे रे,
याही सोचकर कालो टीको आज लगायो रे ।। ४ ।।

(तर्जः धरती धोरां री)

मेलो आयो रे, मेलो आयो रे, मेलो आयो रे,
मेलो आयो भगतों चालो, हेलो मारे खाटू हालो,
बेगा जाकर घूमर घालो, मेलो आयो रे ।। टेर ।।

देखो चाली दुनियाँ सारी-२, हेलो मारे लखदातारी,
बेगा चालो करल्यो त्यारी, मेलो आयो रे,
रिंगस सूँ निशान उठास्याँ-२, खाटू पैदल सगला जास्याँ,
जाके मन्दिर ध्वजा चढ़ास्याँ, मेलो आयो रे... ।। १ ।।

बाबो माल लुटासी भारी-२, आई है लुटण की बारी,
झोली भर देसी दातारी, मेलो आयो रे,
जाके रंग गुलाल उड़ास्याँ-२, खाटू माँही धूम मचास्याँ,
मीठा मीठा भजन सुणास्याँ, मेलो आयो रे... ।। २ ।।

गूँजे भगताँ की किलकारी-२, मुल्के साँवरियो गिरधारी,
जाँकी लीला जग सूँ न्यारी, मेलो आयो रे,
सागे 'हर्ष' ने भी ले जास्याँ-२, ढोलक ढपली चंग बजास्याँ,
होली की धमाल मचास्याँ, मेलो आयो रे... ।। ३ ।।

तर्ज : चान्द चढ्यो गिगनार...

मेलो भर्‌यो विशाल बाबा,श्याम धणी के द्वार थाँसु,
घणी करां मनवार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। टेर ।।

एक बरस के पाछे बाबा, श्याम को मेलो आयो जी,
सगला मिलकर खाटू जास्याँ, मन में हेत समायो जी,
ले घर कां ने लार सगला,
हो जाओ तैयार करियो, न्यूतो थे स्वीकार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। १ ।।

खाटू हालो सेठ साँवरो, झाला दे र बुलावे जी,
मेले मांही आवणिया के, मन की आस पुरावे जी,
लीले रो असवार यो है,
दानी लखदातार थारा, भर देसी भण्डार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। २ ।।

द्वार द्वार क्युँ भटके भाया, सांचो यो ही द्वारो जी,
बंद पड़ी तकदीर को तालो, खुल जावेगो थारो जी,
खाटू रो सरदार यो है,
जग को पालनहार भाया, मतना करो विचार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। ३ ।।

''हर्ष'' कह्वे यो देव निरालो, बाबो खाटू हालो जी,
बेगा सा थे आकर लेल्यो, मोर छड़ी को झाड़ो जी,
मतना करो उवाँर बैठ्यो,
कलयुग को अवतार ऐंकी, महिमा अपरम्पार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : पणिहारी)

मेलो भर्‌यो है थारो जोर को जी, ''आया भगत अपार''-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। टेर ।।

उत्सव मण्डया है चारों मेर जी , ''थारी होवे जै जैकार''-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। १।।

ध्वजा उड़े है असमान जी, ''थारा लहरावे निशान''-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। २ ।।

रंग बसन्ती छा गयो जी, ''खेलां रंग गुलाल''-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। ३ ।।

'हर्ष' खड़्योहैझोलीमाण्डकेजी,''बाबाराखोमेरीलाज''-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। ४।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा...)

या श्याम सुरंगी, मेहंदी मंडवाल्यो थारे हाथ जी ।। टेर ।।

घणी राचणी, ई मेहंदी ने, भजना में घुलवाई,
लाख छुड़ायां ना छूटे-ली-२, एकर हाथ मंडाई जी ।। १ ।।

ई मेहंदी सूं, हाथ मंडाया, तन मन भी रच जावे,
श्याम नाम हाथां के सागे-२, हिवड़े में रच जावे जी ।। २ ।।

नानी-नरसी, करमा बाई, सगला हाथ मंडाई,
भात भरायो खीचड़ खायो-२, हुंडी ने सिकराई जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम की, जादूगारी, मेहंदी जो मंडवासी,
उन भगतां पर श्याम धणी को-२, जादू सो चढ़ जासी जी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्जः धमाल)

राधा कान्हुड़े पर केशर छिड़के छज्जे पे खड़ी,
सांवरिये की पीली-पीली रंग दीन्ही पगड़ी ।। टेर ।।

श्याम बिहारी मुरली बजावे, मीठी तान सुणावे जी,
छज्जे पर बृषभान दुलारी, थिरके घड़ी-घड़ी ।। १ ।।

नीचे आजा गोरी तन्ने, होली आज खिलास्यूं ऐ,
मनड़ो म्हारो क्यूँ तरसावे, उपर चढ़ी-चढ़ी ।। २ ।।

म्हासूं ज्यादा थाने कान्हा, थारी मुरली प्यारी जी,
होठां उपर थारे सोहे, मुरली घणी बड़ी ।। ३ ।।

सांवरियो यूं बोले प्यारी, तानो मत ना मारे ऐ,
मुरली के खातिर तू म्हासूं, कईयां लड़ी-लड़ी ।। ४ ।।

मुरली तो होठां पर सोवे, 'हर्ष' सांवरो बोले जी,
म्हारी हर धड़कन मे राधा, तूही बसी पड़ी ।। ५ ।।

तर्ज : तुझे चान्द के बहाने देखुँ...

रुत फागणिये की आई कि मेलो थारो
खूब भरसी, साँवरिया ।। टेर ।।

थारे गठ जोडे सूँ आस्याँ,
थारे चरणां धोक लगास्याँ,
कि पलक उघाड़्याँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। १ ।।
ग्यारस की रात जगास्याँ,
बारस ने धोक लगास्याँ,
कि सिर पर हाथ धरसी -२,
साँवरिया.... ।। २ ।।
थारी सवामणी करवास्याँ,
थारे छप्पन भोग लगास्याँ,
कि श्याम थाने जिम्याँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। ३ ।।
कहवे ''हर्ष'' म्हें पैदल आस्याँ,
थारे शिखर निशान चढ़ास्याँ,
कि मेले में बुलायाँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(धमाल)

लेकर मोरछड़ी हाथां में तेरा सेवक नाचे रे,
श्याम तेरे किर्तन में ढ़ोलक ढ़पली बाजे रे ।। टेर ।।

कार्तिक महीने सुं भगतां को चोखो जमघट लागे रे,
श्याम तेरे मेले तक सगला, रात्युँ जागे रे ।। १ ।।

ज्युँ ज्युँ फागण नेड़े आवे रंग तेरो परवान चढ़े,
श्याम नाम का चंग मजीरा, घर घर बाजे रे ।। २ ।।

''हर्ष'' कहवे फुलां रो तेरो सोणो सो सिणगार सजे
श्याम तेरो दरबार बड़ो ही, प्यारो लागो रे । ३ ।।

(तर्ज : अजमल जी रा कंवरा भूलू न...)

सिंहासण बैठ्यो, मुलकै यो श्याम धणी,
मुलकै यो श्याम धणी,
भगतां ने पल-पल, निरखे यो श्याम धणी ।। टेर ।।

पचरंगो बागो सोहे, मुरली अधर जी, हाथां में मोर छड़ी,
ओ बाबा थारे हाथां में मोर छड़ी, ... ।। १ ।।

केशरियो टीको माथे, काना में कुण्डल जी, फूलां री लटके लड़ी,
ओ बाबा थारे फूलां री लटके लड़ी, ... ।। २ ।।

सांवली सुरत थारी, मोहनी मुरत जी, गल वैजन्ती पड़ी,
ओ बाबा थारे गल वैजन्ती पड़ी, ... ।। ३ ।।

भगतां रे ''हर्ष'' थारो, रूप निरख जी, आंसुड़ा री लागी झड़ी,
ओ बाबा म्हारे आंसुड़ा री लागी झड़ी, ... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : धमाल)

सुणले बिणजारा म्हारो कर दीजे इक भोत जरूरी काम,
खाटू जाके श्याम सूं म्हारा, कहिजे राम राम ।। टेर ।।

सेठ श्याम सूं जाकर कहिये,चाकर थारो तरसे जी,
दरसण ताँई ओल्यूँ आवे, इबतो आठू याम ।। १ ।।

जेठ की दोपहरी जइयाँ, लाय बदन में लागी जी,
ठण्डक पड़सी श्याम कुण्ड में, न्हाकर सुबह-शाम ।। २ ।।

महर निजर पायक पै करद्यो, खाटू धाम बुलाल्यो जी,
मुण्डो खोलूं तो निकले जी, बस थारो ही नाम ।। ३ ।।

राम राम करतो डोलूं कद, श्याम को हेलो आवे जी,
'हर्ष' दास की आस पुराद्यो, के लागे थारा दाम ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - उड़ - उड़ रे म्हारा काला..)

सुण-सुण रे म्हारा खाटु वाला धणिया,
फागणिये में म्हाने बुलाय लीजे,
चरणां में थारे बिठाय लीजे ।।

रंग रंगीलो फागण आवे, भगतां रो मनड़ो ललचावे,
भगतां री आस पुराय दीजे, चरणां में थारे....

रिंगस सूं निशान उठास्याँ, पगाँ उभाणा थारे आस्याँ,
भगतां ने पार लगाय दीजे, चरणां में थारे....

ढपली चंग मजीरा बाजे, उछल उछल तेरा सेवक नाचे,
भगतां ने नाच नचाय लीजे, चरणां में थारे....

'हर्ष' कहवे फागण में भारी, माल लुटावे लखदातारी,
भगतां री झोली भराय दीजे, चरणां में थारे....

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज - खड़ी रे नीम के नीचे...)

सुण रे भायला सगला खाटू चालस्याँ,
नाच कूदता गीन्दड़ करता, घूमर आपाँ घालस्याँ ।।

रिंगस सूं निशान उठाकर खाटू पैदल जास्याँ जी,
फागण की बरस ने सगला जाकर धोक लगास्याँ जी,
मंदरिये के आगे डेरो डालस्याँ ।।

फागणिये में सेठ साँवरो मोकलो माल लुटासी जी,
जितणो बेगो जो कोई जासी, उतणो ज्यादा पासी जी,
गठ जोड़े के सागे आपाँ चालस्याँ ।।

बेगा सा थे त्यारी करल्यो मेले की रुत आई जी,
फागणिये में थारी भगतों करसी श्याम सुणाई जी,
'हर्ष' भगत ने भी सागे ले चालस्याँ ।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : आज बिरज में होरी रे रसिया...

शीश साँवरिया के सोवे रे पगड़ी,
सोवे रे या मन मोवे रे पगड़ी ।। टेर ।।

जगत पति ने मात यशोधा,
रस्सी बांध, उखल सुं जकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। १ ।।
काली कमलिया काँधे धर के,
धेनु चरायबा ने, चाल्यो ले लकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। २ ।।
मटकी भरके गुजरिया चाली,
देख छवि, छलकी जल गगरी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ३ ।।
कुंज गलिन में रास रचावे,
हाथां बीच, मुरलिया पकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ४ ।।
''हर्ष'' हरि की मोहिनी झाँकी,
निरख दिवानी, बिरज की नगरी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : श्याम थारी ओल्यूं आवे जी...)

श्याम थांपे केशर छिड़कां जी-२,
बनड़ा सा आज सांवरा, थाने निरखां जी,
श्याम थांपे केशर छिड़कां जी ।। टेर ।।

कानां कुण्डल सोहे थारे, गल वैजन्ति हार, सांवरा,
मोर छड़ी हाथां में सोहे, खूब सज्यो सिणगार,
नैण म्हारा थांपे अटक्या जी, ... ।। १ ।।

केशर तिलक विराजे माथे, सिर घुंघराला बाल, सांवरा,
थाने बिठाकर लीलो चाले, तिरछी-तिरछी चाल,
लगावे जोर का ठुमका जी, ... ।। २ ।।

बांकी अदा सूं थे इतरावो, होठां पर मुस्कान, सांवरा,
प्यारी प्यारी मुरली बजावो, छेड़ो मीठी तान,
सांवरा म्हे तो भटक्या जी, ... ।। ३ ।।

कालो टीको आज लगावां, लेवां निजर उतार, सांवरा,
''हर्ष'' सांवरा लाड लडावां, छिड़कां इत्तर फुहार,
करां फूलां री बरखा जी, ... ।। ४ ।।